ISBN: 978-81-974088-0-9

11. वर्तमान समाज और दिव्यांग बालक की व्यवसायिक समस्याओं का अध्ययन करना

शत्रुघन पटेल

सहायक प्राध्यापक,
शांत्री बाई कला वाणिज्य विज्ञान महाविद्यालय,
महासमुन्द, छत्तीसगढ़.

परिचय :–

विकलांग बालक वह युवा व्यक्ति होता है, जिसकी शारीरिक या मानसिक विकलांगता होती है, जिसके कारण उसे वे काम करने में कठिनाई होती है, जो अन्य बच्चे आसानी से कर सकते हैं। इसमें बहरा या अंधा होना, बालेने या सीखने में परेशानी होना या घूमने में कठिनाई होना शामिल हो सकता है। व्यावसायिक विकास मुख्यतः एक निश्चित कौशल को प्राप्त करने तथा काम करने के अवसरों में मुख्य भूमिका निभानें के साथ व्यवसायिक शिक्षा विकलांगों को अधिकृत करने के लिए शिक्षा के मार्ग के रूप में प्रशस्त करने का कार्य करती है। प्रायः दिव्यांग बालकों में उनकी प्रतिभा और सामाजिक भेदभाव के कारण आत्म विश्वास और कम आत्म सम्मान की भावना होने के कारण व्यवसायिक शिक्षा एक व्यवसायिक समस्या के रूप में उभर कर आती है।

प्रस्तावना :–

विकलांग बालकों में वे बालक शामिल हैं, जिनमें दीर्घकालिक शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक या संवेदी विकार हैं, जो विभिन्न बाधाओं के साथ मिलकर समाज में समान आधार पर उनकी पूर्ण और प्रभावी भागीदारी में सम्मिलित रहते है।

व्यावसायिक शिक्षा व्यक्ति को नौकरियों के लिए तैयार करती है और इस प्रकार उसे समाज का उत्पदाक सदस्य बनाती है। इसमें पर्याप्त रोजगार क्षमताएँ है – यानी सभी के लिए अवसर। यह श्रम की गरिमा – कार्यबल के एक अच्छी तरह से प्रशिक्षित पदानुक्रम की ओर ले जाती है। व्यवसायिक समस्या मुख्यतः विव्यांग बालकों में व्यसायिक शिक्षा के कार्योक्रम के उचित क्रियान्वयन न होने के कारण दिव्यांग बालकों के लिए उपयोगी सिद्ध नहीं होती है।

जिसके फलस्वरूप उनमें भावनात्मक एवं मनोवैज्ञानिक समस्याएं तथा व्यसायिक कौशलों के प्रति अक्षमता उत्पन्न होने के साथ उन्हें एक स्वतंत्र जीवन जीने में असमर्थ बनाती है। जिसके फलस्वरूप विकलांग बालकों की व्यवसायिक रूचियां, शारीरिक क्षमता, काम के आदतों के साथ–साथ व्यवसायिक कौशलों की उत्तर जीविता से अन्य विशेषताओं को तय करने के लिए एक निश्चित पैमाना का उपयोग करने में असमर्थ होते है।

अध्ययन का उददे्श्यः

1. दिव्यांग बालकों के अध्ययन का हमारा मुख्य उद्देश्य व्यावसायिक कौशलों का विकास करना।
2. दिव्यांग बालकों के अध्ययन का हमारा मुख्य उद्देश्य व्यावसायिक कौशलों के विकास के साथ उनमें आत्म निर्भर की भावना का विकास करना।
3. दिव्यांग बालकों के अध्ययन का मुख्य उद्देश्य व्यावसायिक कौशलों सम्बन्धित समस्या का समाधान करना।

विकलांग बालकों की व्यावसायिक समस्या :–

व्यवसायिक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालकों में व्यवसायिक कौशलों के विकास के साथ–साथ उन्हें मुक्त जीवन जीने में सहायता करने से है।

जिसके फलस्वरूप दिव्यांग बालकों की शिक्षा का भविष्य व्यवसायिक शिक्षा को ग्रहण करते हुये उनमें भावनात्मक और मनोविज्ञान समस्याओं का निदान करने के साथ सीखने की अक्षमता वाले लोगों के प्रति अत्यंत उपयोगी एवं कारगर सिद्ध होती है।

अतः दिव्यांग बालक के व्यवसायिक शिक्षा हेतु विभिन्न शिक्षण कार्यक्रमों का निस्पादन होने के साथ एक ठोस नींव होनी चाहिए।

जिसे अच्छी तरह से क्रियान्वयन करने चाहिए परन्तु वर्तमान समाज में व्यवसायिक शिक्षा एक व्यापारिक दृष्टिकोण के रूप में परिवर्तित होकर दिव्यांग बालकों के लिए व्यवसायिक समस्या के रूप में उभर रही है जो कि निम्ननिलिखित है :–

रोजगार असमानताएँ :–

दिव्यांग बालकों के लिए व्यवसायिक समस्या व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने के साथ एक निश्चित कार्य करने के अनुभव से वंचित होने से होती है। प्रायः व्यवसायिक शिक्षा को प्राप्त करके व्यक्ति अपने जीविकों पार्जन के एक अभिन्न अंग के रूप में परिभाषित करती है। दिव्यांग बालकों में व्यवसायिक स्थलों पर भेदभाव, दुर्गम कार्य स्थल और सुविधाओं की कमी अकसर उनके व्यवसाय या अवसरों को सीमित कर देती है जो कि रोजगार की असमनताएं को प्रकट करती है।

परिवहन चुनौतियां :–

सार्वजनिक परिवहन प्रणाली अक्सर दिव्यांग व्यक्तियों की जरूरतों को ध्यान में रखकर नहीं बनाई जाती। व्हीलचेयन रैंप और श्रव्य घोषणाओं जैसी अपर्याप्त सुविधाएं स्वतंत्र गतिशीलता में बाधाएं पैदा करती हैं। जिसके फलस्वरूप वे अपने व्यावसायिक कार्य स्थल में पहुँच पाने में असमर्थ होते हैा, यह एक व्यावसायिक समस्या के रूप मे मुख्यतः प्रकट होती है।

अंग हानि :–

दिव्यांग बालकों की मुख्यतः शरीरिक क्षति लगभग 40 प्रतिशत के आस–पास होती है किन्तु व्यवसायिक कार्य करते समय क्षतिग्रस्त अंगों में जैसे – हाथ या बांह में चोट लगती हैं, तो अंग का नुकसान या क्षति व्यक्ति की कम्प्यूटर का उपयोग करने की क्षमता को प्रभावित कर सकती है। कुछ प्रकार की दर्दनाक अंग क्षति, जैसे तंत्रिका क्षति, अंग की कार्यक्षमता को प्रभावित कर सकती है, जिसके फलस्वरूप व्यावसायिक कार्य बाधित होती है।

मानसिक स्वास्थ्य संबंधी विचार :–

दिव्यांगता के साथ जीने के भावनात्मक बोझ को कम करके नहीं आंका जाना चाहिए। व्यक्तियों को अवसाद, चिंता और सामाजिक अलगाव की उच्च दर का सामना करना पड़ सकता है। दिव्यांग बालकों की मानसिक स्वास्थ्य मुख्यतः उनके व्यवसायिक शिक्षा को प्रभावित करने के साथ व्यवसायिक कौशलों की क्षमतओ में कमी के साथ, सीखने और रोजमर्रा के जीवन कौशल

को प्रभावित करती है। जिसके कारण दिव्यांग बालकों में वास्तविक आयु तथा मानसिक आयु में अन्तर सुस्पष्ट होती है। यह दिव्यांग बालकों के व्यवसायिक स्थल पर कार्य करने, संवाद करने, व्यवहार में स्पष्ट होकर व्यवसायिक समस्या को रूप धारण करती है।

शैक्षिक बाधाएं :–

समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए विधायी प्रयासों के बावजूद, शैक्षणिक, सस्थानों में बाधाएं बनी हुआ है। दुर्गम सुविधाएं, उचित आवास की कमी और प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी विकलांग छात्रों के सामने आने वाली शैक्षणिक चुनौतियों में योगदान करती है। जिसके कारण दिव्यांग छात्रों में व्यावसायिक कौशलों का विकास नहीं हो पाता जो कि व्यावसायिक समस्या के रूप में शैक्षिक बाधाएं भी सहयोग करने मे ंमहत्वपूर्ण भूमिका निभांती है।

दिव्यांगों के सशक्तीकरण की दिशा में सरकारी प्रयास

संविधान के अनुच्छेद 41 निःशक्तजनों को लोक सहायता उपलब्ध कराने की व्यवस्था करता है। इसी प्रकार सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय का उद्देश्य भी एक ऐसे समाज का निर्माण करना है जहॉ विभिन्न पिछड़े एवं कमजोर तबकों के साथ–साथ दिव्यांगजनों को एक सुरक्षित सम्मानित और समृद्ध जीवन सुलभ कराया जा सके किन्तु विकलांग बालकों को व्यावसायिक विकास पूर्ण करने में असमर्थ साबित हो रहा है।

निष्कर्ष :–

प्रत्येक बालक की कुछ आधारभूत आवश्यकताएं होती है, दिव्यांग बालकों की आवश्यकताएं एवं समस्याएं उनकी दिव्यांगता के प्रकार, श्रेणी व तीव्रता पर निर्भर करती है किन्तु दिव्यांग बालकों की मानवीय आधार पर कुछ नितान्त आवश्यकताओं की पूर्ति होना उनके विकास के लिए आवश्यक होती है जैसे – आवश्यकता आधारित शिक्षा, स्वयं कार्य करने की क्षमता का विकास और समाज में वैयक्तिक सम्मान की प्राप्ति के साथ व्यवसायिक शिक्षा की प्राप्ति भी दिव्यांग बालकों के मूल अधिकार के रूप में चिन्हित होने के साथ विकास के मार्ग को प्रशस्त करने मे महती भूमिका निभाती है। किन्तु दिव्यांग व्यक्तियों में कार्य करने के लिए व्यवसायिक स्थलों पर शारीरिक एवं मानसिक बाधाएं कई प्रकार के विकृतियों का प्रादुर्भाव करने के साथ

वर्तमान समाज मे असमानता की भावना को प्रगट करती है जिसके फलस्वरूप व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त कर दिव्यांग बालक भी व्यवसायिक समस्या तथा रोजगार के अवसरों से वंचित होने के साथ समाज में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करने में वंचित रह जाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

1. विश्व स्वास्थ्य संगठन कार्यशीलता, विकलांगता और स्वास्थ्य का अंतर्राष्ट्रीय वर्गीकरण (आईसीएफ) जिनेवा 2001 डब्ल्यूएचओं.
2. अमेरिकी स्वास्थ्य एवं मानव सेवा विभाग। विकलांग व्यक्तियों के स्वास्थ्य एवं तंदुरूस्ती में सुधार के लिए सर्जन जनरल का आहवानवाशिंगटन, अमेरिकी और मानव सेवा विभाग, सर्जन जनरल का कार्यालय 2005
3. दृष्टि आई. ए. एस. डॉट कॉम
8. विकलांग डॉट कॉम